दिल के दो बाईपास आप्रेशन के बाद सब दरवाजे बंद

यह 48 वर्षीय मस्कट का सरकारी कर्मचारी जोकि पिछले 15 वर्ष से ह्रदय रोग से पीड़ित था। वह तब 33 वर्ष के थे जब उन्हें पहली बार सीढ़ीयां चढ़ते हुए छाती में दर्द हुआ था। शारीरिक जांच करवाने पर पता चला कि उनके ह्रदय को रक्तप्रदान करने वाली तीनों आट्रीज़ बंद हो चुकी है।

Dr. S.J.S. Randhawa
M.D.D.N.B

सभी प्रकार की दवाईयों सेवन करने के बावजूद इनको छाती के दर्द से राहत नहीं मिली और इनको बाईपास सर्जरी की सलाह दी गई। काफी सोच विचार के बाद इन्होनें 1996 में जोर्डन से बाईपास सर्जरी करवा ली और चार साल स्वस्थ जीवन व्यतीत किया। परन्तु इसके बाद के तीन साल उन्होंने दुबारा बड़ी दर्द और परेशानी में व्यतीत किये क्योकि उनके सर्जन ने उन्हें दूसरी बाईपास सर्जरी करवाने की सलाह इसलिए नहीं दी क्योकि उनका उपचार काफी कठिन हैं। अतः 2003 में दुनीयां के जानेमाने सर्जन डा. चेरियन ने इस असाधारण केस की जिम्मेवारी ली। इनका चेनई मे आप्रेशन किया गया। परन्तु एक माह के भीतर इनका छाती का दर्द दुबारा शुरू हो गया। अब उम्मीद की कोई किरण दिखाई न देरही थी। 2007 में वह सर्वोत्म हस्पतालों में से एक फ्रैंकफर्ट जर्मनी में गए और उन्होंने कहा कि तीसरी बाईपास सर्जरी करना संभव नहीं है और यह स्टैंटस भी इनकी कोई मदद नहीं कर पाएगें। बड़ा परिवार का बोझ और आने वाले समय में ऑफिस जॉब करने की स्थिती में नहीं थे और उन्हें धीमी गति से मौत अपने पास आती नजर आ रही थी। इस समय पर जब उन्हें वैबसाईट पर रंधावा हस्पताल का पता चला तो उन्होंने ने डा. एस.जे.एस. रंधावा से संपर्क करके उन्हें अपनी तकलीफ बताई। उनकी इस हालत तो देखकर डा. रंधावा ने उनको गारण्टी तो नहीं दी परन्तु अपनी तरफ से पूर्ण प्रयास का आश्वासन दिया। 1 अक्तूबर 2009 को वह अमृतसर आ गये। उनका वजन 89 किलों था। क्योंकि मस्कट में रैडमीट और तले पदार्थ ज्यादा खायें और व्यायम की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देने की वजह से उनका ब्लडप्रैशर भी 170/110 था। E.F (Enjection Fraction) भी केवल 20% था। साधारण्ता यह 55% से 75% होना चाहिए। उनकी छाती में भयंकर दर्द था। यहां तक की वह अपनी कमीज का बटन लगाने में भी तकलीफ महसूस करते थे। वह अपनी जिन्दगी को लेकर काफी आँशकित थे। क्योंकि उन्होंने दुनियां के सभी बड़े हस्पतालों से उपचार करवाया था। ऐसे में रंधावा हस्पताल में उनकी ए.एम.टी (एंडवासड मैडीकल ट्रिटमैंट) एवम् ई.सी.पी. (एक्सर्टनल काऊंटर पलसेशन) 0% चर्बी मुक्त खाना एवम् कुछ खास व्यायम जो इस तरह के मरीज़ों के लिए तैयार की गई थी। शुरू करवा दी गई। एक सप्ताह में ही वह अपने आप को बेहतर महसूस करने लगे थे और 15वें दिन तक आते-आते 500 मीटर तक बिना किसी दर्द के चलने लगे। वह सैर की दूरी बढ़ाते हुए एक महीना खत्म होने तक दो किलोमीटर तक सैर करने लगे। यह उनके लिए काफी आशचर्यजनक स्थिति थी। कि जो व्यक्ति एक महीना पहले शौचाल्य जाने में भी पीड़ा महसूस करता था और उसकी सांस फूल जाती थी। वह अब दो किलोमीटर तक चलने लगा था। छः किलो वजन भी कम हो गया तथा उन की ई.एफ भी 20% से बढ़कर 33% तक पहुंच गई। उनका टी.जी. लैवलज़ जो समान्यता 100 होना चाहिए वह 379 से घट कर 170 हो गया। 12 नंवबर 2009 को अपना ईलाज पूरा होने के बाद उन्होंने उा. रंधावा व पूरे भारत का धन्यवाद करते हुए कि उन्हें यहां आकर एक नई जिन्दगी मिली और वह शकुशल अपने देश रवाना हो गए। डा. रंधावा का कहना है कि मैंने ऐसे सैकड़ों मरीजों को जिन्हें दूसरे डाक्टरों ने बाईपास सर्जरी या स्टैटस की सलाह दी थी उनको ई.सी.पी+ए.एम.टी तकनीक के द्वारा ईलाज करवाने की सलाह दी। लेकिन अधिकतर लोगों को इस तकनीक के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अधिकतर अस्पतालों में यह तकनीक सस्ती होने के बावजूद उपलब्ध नहीं है। जबकि पंजाब में बाईपास सर्जरी डेड़ से दो लाख रूपये और दो स्टैटस डलवाने पर कम से कम तीन लाख रूपये खर्च होते है ऐसे में गरीब आदमी इतना पैसा कहा से लायेगा। जबकि ई.सी.पी. और ए.एम.टी. बहुत कम खर्च में हो जाती है। ECP+AMT की सफलतादर सटैंटस एवं बाईपास सर्जरी के बराबर ही लगभग 90% है। डा. रंधावा एक ओर बात सही कहते है कि इस लेख को पढ़ने वाला हर व्यक्ति कम से कम दस मरीज़ों को ई.सी.पी+ए.एम.टी. (यू.एफ.डी.ए. अमेरिका)द्वारा मान्यता प्राप्त है। जिसमें न तो दर्द होता है और मृत्युदर भी 0% है। इस तकनीक में न तो एनसथिसिया, न कोई कट, न कोई इंजैक्शन और 100% सुरक्षा तथा खर्च भी बाईपास सर्जरी से आधा तथा सटैटस से एक तीहाई खर्च होता है। अन्ततः पंजाब सरकार को डा. रंधावा अपील करते हैं कि वह इस ईलाज का खर्च वहन करें।

Abdulla Mohamed

Randhawa Hospital

12, Mall Road, Amritsar, M:9814052303
Website:www.randhawhospital.com
Email: dr.randhawa@gmail.com